(c) This will be worked out on receipt of details of provisions included in the State budget under different schemes.

**चुर्क-चोपन-गढ़वा रोड लाइन**

२१५८. **श्री राम स्वरूप** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चुर्क-चोपन-गढ़वा रोड लाइन पर कब से सवारी गाड़ी चलाई जायेगी; और

(ख) क्या उक्त लाइन पर माल गाड़ियां चलने लगी हैं और यदि हां, तो क्या जन साधारण को माल वाहन की सुविधा उपलब्ध है ?

**रेलवे मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां)** : (क) १-४-१९६४ से चूर्क-चोपन-गढ़वा रोड सेक्शन सवारी यातायात के लिए खोल दिया गया है । उसी तारीख से इस सेक्शन पर निम्नलिखित गाड़ियां चलनी शुरू हो गयी हैं :

| सेक्शन | चलने वाली गाड़ियों की संख्या |
|---|---|
| चुर्क-चोपन | दो जोड़ी सवारी गाड़ियां |
| चोपन-गढ़वा रोड | एक जोड़ी मिली जुली गाड़ियां |

(ख) जी हां ।

**टिड्डी दल द्वारा क्षति**

२१५९. **श्री ओंकार लाल बेरवा** : क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि टिड्डी दल फसलों को बहुत क्षति पहुंचाते हैं; और

(ख) यदि हां, तो सरकार ने उन्हें नष्ट करने के क्या उपाय किये हैं और वर्तमान योजना में इस खतरे को समाप्त करने के लिये क्या पग उठाये गये हैं ?

**खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह)** : (क) जी हां । फिर भी भारत टिड्डियों से अभी मुक्त है और निकट भविष्य में किसी भी टिड्डी दल के आक्रमण की सम्भावना नहीं है, क्योंकि रेगिस्तान टिड्डी क्षेत्र में टिड्डियों की गतिविधियों में शिथिलता आ गयी है ।

(ख) (१) केन्द्रीय सरकार के यहां स्थायी रूप से एक टिड्डी चेतावनी संगठन है जिस के पास पर्याप्त रूप में मशीनें, कीटनाशी औषधियों और रेगिस्तानी क्षेत्रों में जहां पर वे सामान्यतया रहती और अंडे देती हैं टिड्डी दलों की बरबादी के लिए स्टाफ है ।

(२) राज्य सरकारों के पास भी पर्याप्त स्टाफ, कीटनाशी औषधियों का भंडार और अपने खेती वाले क्षेत्रों में टिड्डी नियंत्रण के लिये मशीनें रहती हैं ।

(३) जब भी आवश्यकता होती है, फसलों की महामारी और रोगों के नियंत्रण के लिए वनस्पति रक्षा, संगरोध और संचयन निदेशालय के अन्तर्गत केन्द्रीय हवाई एकक को कार्य करने के लिये भी भेजा जाता है ।

(४) भारत संयुक्त राष्ट्र विशेष निधि रेगिस्तान टिड्डी परियोजना के आरंभ होने से १९६० से उस का सदस्य है और १.४१ लाख रुपये वार्षिक का योगदान देता है । इस परियोजना का उद्देश्य टिड्डी नियंत्रण के उत्तम और दीर्घ अवधि तरीकों का विकास करना है और राष्ट्रीय टिड्डियों के विरुद्ध अनुसन्धान और नियंत्रण संगठनों को शक्तिशाली बनाना है ।

(५) भारत और पाकिस्तान के अफसरों में सीमा क्षेत्र में बैठकें इस उद्देश्य से होती हैं कि प्रभावित सीमा क्षेत्रों का सर्वे करने का अवसर मिल सके । ये बैठकें टिड्डी परिज्ञान और नियंत्रण उपायों के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने के लिए समय-समय पर होती हैं ।